Journal of Socio-Educational & Cultural Research
International Journal of Arts & Social Sciences
Peer Reviewed Refereed Journal
Published by Srijan Research Foundation, Varanasi India
Vol.12, N. 27, October-December 2026,
DOI: https://doi.org/10.68868/14Js15aK33
www.jsecrjournal.in

गांधी जी का सर्वोदय एवं समकालीन परिवेश

प्रो0 रेखा,
समाजशास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
rekhamgkvp@gmail.com

सारांश–
तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी अपनाओं, जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा? क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन व भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा जिनके पेट भूखे है और आत्मा अतृप्त है? अब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम समाप्त होता जा रहा है।'' प्रत्येक व्यक्ति को यह मन्त्र हमेशा याद रखना चाहिए कि वह जो काम कर रहा है उससे हाशिये पर खड़े गांधी के 'आखिरी आदमी' के आँखों से आँसू पोंछ रहा है या नहीं?

मुख्य शब्द– सर्वोदय, समाज, उन्नति, मूल्यों, अहिंसा

सर्वोदय का अर्थ है सबकी समान उन्नति। एक व्यक्ति का भी उतना ही महत्व है जितना अन्य व्यक्तियों का सामूहिक रूप से। इनके अनुसार अमीर, मध्यम वर्ग, गरीब, मूर्ख, विद्वान, छूत–अछूत तथा अल्पमत–बहुमत सबका उदय हो। सबकी कमी की पूर्ति हो। कल्याण किसी एक वर्ग का न हो, वरन् सम्पूर्ण विश्व का हो। सर्वोदयी नेता भूदान, सम्पत्ति दान तथा ग्राम दान का समर्थन करते है। इन योजनाओं की सफलता से अनेक लाभ होगें।[1] शोषण का अंत, दलगत प्रणाली के दुर्गुणों से मुक्ति, अहिंसा, विकेन्द्रीकरण, सहयोग, पारिवारिक सम्बन्ध की स्थापना तथा हृदय परिवर्तन आदि इनके मुख्य लाभ हो सकते है। गांधी जी का चिंतन समाज के अंतिम से अंतिम व्यक्ति के कल्याण पर आधारित है। सर्वोदय की धारणा गांधी जी में मूल रूप से विद्यमान थी। वह रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' को पढ़कर गांधी जी के हृदय में सर्वोदय की भावना और अधिक दृढ़ हो गई। इस पुस्तक का गांधी के अंतःकरण पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी जी ने गुजराती भाषा में 'सर्वोदय' शीर्षक से रस्किन की पुस्तक का अनुवाद भी किया है। अपनी पुस्तक सर्वोदय में

गांधी जी लिखते है कि ''जो चीज मेरे अंदर गहराई से छिपी हुई थी, रस्किन के ग्रन्थ में मैंने उसका स्पष्ट प्रतिबिंब देखा।''[2]

सर्वोदय :

1. सबकी भलाई में हमारी भलाई निहित है।
2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक सा है।
3. श्रम के महत्व को दर्शाते हुए किसान व मजदूर के जीने को सच्चा जीवन माना है।गांधी जी ने स्वयं स्वीकार किया है कि ''पहली चीज मैं जानता था। दूसरी को मैं धुंधले रूप में देखता था, तीसरी का मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। 'सर्वोदय' ने मुझे दिये की तरह दिखा दिया कि पहली चीज में ही दूसरी दोनों चीजें समाई हुई है।[3] गांधी जी का सर्वोदय वेन्थम और जे0एस0 मिल द्वारा प्रतिपादित उपयोगितावाद से सर्वथा भिन्न है। वेन्थम का उपयोगिता, अधिकतम संख्या के सुख' (Greatest Good of Greatest Number) की वकालत करता है।[4] वेन्थम का अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख विशुद्ध सुखवादी प्राणी है जबकि गांधी जी का मानव आध्यात्मिक और नैतिक मानव है जो इस सभ्यता में आस्था रखता है कि–

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत।[5]

अर्थात् गांधी जी का मानव अपने भौतिक सुखों की कामना करने वाला स्वार्थी प्राणी नहीं है उसकी कामना तो यही है कि सभी लोग सुखी हो, सभी निरोगी हो, कोई दुःख का भागी न हो, सभी का कल्याण हो। गांधी जी के अनुसार 'जिस राज्य में एक व्यक्ति भी भूखा है वह आदर्श राज्य नहीं है, चाहे उसमें रहने वाले ज्यादातर लोग कितने ही सुखी क्यों न हो। इस आधार पर गांधी जी वेन्थम के अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख (Greatest Good of Greatest Number) के उपयोगितावादी सिद्धांत को निरस्त कर देते है। 4 अक्टूबर 1949 में गांधी जी ने 'हरिजन पत्रिका' में प्रकाशित अपने लेख में लिखा है कि ''मेरा जीवन लक्ष्य केवल भारतीयों में बंधुत्व की स्थापना करना नहीं है।''[6] गांधी जी एक ऐसे सर्वोदय समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, शोषण, असमानता एवं हिंसा जैसी बुरी प्रवृत्तियों का सर्वथा अभाव होगा। सर्वोदयी समाज में सिद्धांत हीन राजनीति (Politics without Principle) धन बिना श्रम के (Money without Labour) बिना चरित्र के ज्ञान (Knowledge without character) बिना नैतिकता के व्यापार (Business without Morality) विज्ञान बिना मानवता (Science without Humanity) और सेवा बिना त्याग (Service without Sacrifice) को 'महान पाप' की संज्ञा दी गई है।[7]

गांधी जी ने सर्वोदय सिद्धांत के अन्तर्गत अल्पमत तथा बहुमतवाद इन दोनों आदर्शों को अत्यन्त महत्व देकर इन्हें आपस में मिला दिया। इन दोनों सिद्धांतों ने मिलकर गांधी जी के सर्वोदय चिंतन धारा की नींव रखी। गांधी जी की दृष्टि में ये दोनों विचारधाराएं एक दूसरे की पूरक है।

गांधी जी के सर्वोदय में सन्निहित विशेषताओं व महत्व को हम इस रूप में देख सकते है–

अहिंसा :

गांधी जी के सिद्धांतों का मूलभूत नियम है। उन्होंने अपने चिंतन में अहिंसा के विचार का सार प्रस्तुत किया। अपने सर्वोदय सम्बन्धी विचारों के अन्तर्गत गांधी जी ने अहिंसा के आधारभूत महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा ''इस प्रकार का साधन पैदा करना सर्वोदय का कर्तव्य है न कि किसी के साथ विवाद में पड़ने का।

सर्वोदय के संचालक गांधीवाद को भूल जायें, लेकिन सर्वोदय के प्रत्येक वाक्य में अहिंसा और ज्ञान का दर्शन होना चाहिये।

नैतिक महत्व :

गांधी जी ने सर्वोदय के नैतिक महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि ''सर्वोदय की सिद्धि अहिंसा की सिद्धि पर निर्भर है। अहिंसा की सिद्धि तपश्चर्या पर निर्भर है। तपश्चर्या सात्विक होनी चाहिये। उसमें अविश्रांत उद्यम व विवेक समाहित है। शुद्ध तप में शुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है। अनुभव बताता है कि लोग अहिंसा का नाम तो लेते है किन्तु बहुतों को मानसिक आलस्य इतना रहता है कि वे वस्तुस्थिति का परिचय करने तक का परिश्रम नहीं करते है।

नवीन समाज की रचना :

गांधी जी ने सर्वोदय के दर्शन को अभिन्न माना है। उनका सर्वोदय दर्शन प्राचीन भारतवर्ष के शाश्वत मूल्यों के आधार पर एक नवीन समाज की रचना करना चाहता है। गांधी जी ने सर्वोदय सम्बन्धी दर्शन के साथ शारीरिक परिश्रम एवं सभी धर्मों के प्रति सम्मान के भाव को भी बनाये रखा। उन्होंने सर्वोदय समाज की स्थापना के लिये अनेक सृजनात्मक कार्य प्रारम्भ किये। गांधी जी ने सर्वोदय को ध्यान में रखकर देश में सदियों से व्याप्त कुप्रथाओं से मुक्ति दिलाने हेतु कई कार्यक्रम शुरू किये।

अस्पृश्यता की समाप्ति :

गांधी जी के सर्वोदय में अस्पृश्यता रूपी कुप्रथा को समाप्त करने का भाव निहित है। अस्पृश्यता रूपी अभिशाप पर चिंतन करते हुए गांधी जी ने लिखा है कि ''मेरी राय में हिन्दू धर्म में दिखायी पड़ने वाला अस्पृश्यता का वर्तमान रूप ईश्वर और मनुष्य के खिलाफ किया गया भयंकर अपराध है और इसीलिये वह एक ऐसा विष है जो धीरे–धीरे हिन्दू धर्म के प्राण को ही निःशेष किये दे रहा है।[8]

श्रम पर आधारित आधारभूत शिक्षा :

गांधी जी सर्वोदय के लिए श्रम पर आधारित बेसिक अथवा आधारभूत शिक्षा को प्रमुख स्थान प्रदान करते थे। यह शिक्षा जीविकोपार्जन के लिए उपयोगी होती थी और इसके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति कार्य कुशलता व प्रगति की दिशा में निरन्तर अग्रसर होता है।[9] बुनियादी शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने कहा 'बुनियादी शिक्षा का लक्ष्य दस्तकारी के माध्यम से बालकों का शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास करना है। किन्तु मैं मानता हूँ कि कोई भी पद्धति, जो शैक्षणिक दृष्टि से सही हो और जो अच्छी तरह चलायी जाय, आर्थिक दृष्टि से भी उपयुक्त सिद्ध होगी। उदाहरण के लिये हम अपने बच्चों को मिट्टी के खिलौने बनाना भी सिखा सकते है, जो बाद में तोड़कर फेंक दिये जाते है। इससे भी उनकी बुद्धि का विकास होगा। परन्तु इसमें इस महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत की उपेक्षा होती है कि मनुष्य के श्रम और साधन सामग्री का अपव्यय बिल्कुल नहीं होना चाहिए। उनका अनुत्पादक उपयोग कभी नहीं करना चाहिए। अपने जीवन के प्रत्येक श्रम का सदुपयोग ही होना चाहिए, इस सिद्धांत के पालन का आग्रह नागरिकता के गुण का विकास करने वाली सर्वोत्तम शिक्षा है, साथ ही बुनियादी तालीम स्वावलम्बी भी बनाती है।[10]

ग्राम स्वावलम्बन पर आधारित :

गांधी जी का सर्वोदय ग्राम स्वावलम्बन पर आधारित ग्रामीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। वस्तुतः महात्मा गांधी ने प्रत्येक मनुष्य में स्वावलम्बन की प्रवृत्ति की भावना को विकसित करने का अथक प्रयत्न किया। इस तरह से गांधी जी का सर्वोदय चिंतन सहभागिता के प्रजातंत्र की बुनियाद निर्मित करता है जिससे कि हर व्यक्ति समाज में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। इस प्रकार से वे एक ऐसा समाज निर्मित करना चाहते थे जिसकी

हर एक इकाई स्वावलम्बी तथा आत्मनिर्भर बन सके। इसके साथ ही गांधी जी सर्वोदय चिंतनधारा के अन्तर्गत आर्थिक समानता के ध्येय को साथ लेकर चलती है। सर्वोदयी विचारधारा हर मनुष्य से यह उम्मीद प्रकट करती है कि आवश्यकता के अनुसार ही सम्पत्ति का संग्रह करे। प्रत्येक व्यक्ति अपने को सम्पत्ति का स्वामी न समझे और इसका उपभोग सार्वजनिक कल्याण हेतु किया जाय। इस प्रकार के बदलावों से वे तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करना चाहते थे।

शारीरिक परिश्रम को महत्व :

गांधी जी ने शारीरिक परिश्रम के महत्व को अपने लेखों में व्यक्त करते हुए लिखा है कि ''जब तक हम अपना अहंकार भूलकर शून्यता की स्थिति प्राप्त नहीं करते, तब तक हमारे लिए अपने दोषों को जीतना सम्भव नहीं है। ईश्वर पूर्ण आत्म समर्पण के बिना संतुष्ट नहीं होता। वास्तविक स्वतंत्रता का इतना मूल्य वह अवश्य चाहता है और जब मनुष्य अपना ऐसा समर्पण कर चुकता है तब तुरन्त ही वह अपने को प्राणी मात्र की सेवा में लीन पाता है। यह सेवा ही तब उसके आनन्द और आमोद का विषय हो जाती है। तब वह बिल्कुल नया आदमी बन जाता है तथा ईश्वर की इस सृष्टि की सेवा में अपने को खपाते हुए कभी नहीं थकता।[11]

विकेन्द्रीकरण समाज व्यवस्था पर आधारित :

गांधी जी का सर्वोदय समाज सम्बन्धी अवधारणा विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था पर आधारित है। उनके आर्थिक चिंतन की प्रमुख बुनियाद विकेन्द्रीकरण का नियम है। गांधी जी ने स्पष्ट किया है कि ''यदि भारत को अपना विकास अहिंसा की दिशा में करना है, तो उसे बहुत सी चीजों का विकेन्द्रीकरण करना पड़ेगा। केन्द्रीकरण किया जाए तो फिर उसे कामय रखने के लिए और उसकी रक्षा के लिये हिंसा बल अनिवार्य है। धनवानों के महलों के लिये आवश्यक बलवान रक्षक चाहिये, जो डाकुओं से उनकी रक्षा करें। यही बात बड़े कारखानों की है। गांव को केन्द्र में रखकर जिस भारत का निर्माण होगा वह शहर प्रधान भारत की अपेक्षा शहर प्रधान जल, थल और वायुसेनाओं से सुसज्जित होगा तो विदेशी आक्रमणों का कम खतरा रहेगा।[12]

राजनीतिक विकेन्द्रीकरण :

गांधी जी के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण का आशय है– कुटीर उद्योगों को स्थापित करना। उन्होंने केन्द्रीकृत उद्योगों को त्यागकर विकेन्द्रीकरण के तहत छोटे कुटीर उद्योग धन्धों को स्थापित करने की बात की है। कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन प्रदान करना गांधी जी का मूलभूत चिंतन है। मानव का एक दूसरे के शोषण को समाप्त करने का सरल साधन है कुटीर उद्योग धन्धों की स्थापना करना। उन्होंने कुटीर उद्योगों को अपनाने के साथ–साथ अनेक सृजनात्मक कार्यों को करने की बात कही। छोटे उद्योगों को स्थापित करने से गांवों का विकास होगा। इस प्रकार की व्यवस्था को अपनाने से समस्त लोगों को अपने रोज की जरूरत की चीजें आसानी से मिल सकेंगी तथा देश के हर नौजवान को जीविकोपार्जन की समस्या से निजात मिल सकेगी/हैं। भारतवर्ष के लिये कुटीर उद्योग अत्यधिक उपयोगी है, क्योंकि ये लघु उद्योग रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते है। इन कुटीर उद्योगों से भी सर्वोदय के वास्तविक स्वरूप की कल्पना कर सकते है। आज की प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में ये छोटे उद्योग पिछड़ गये है। इस पिछड़ेपन से मुक्ति पाने के लिये तकनीकी का प्रयोग करना होगा। इसके लिये सर्वोदय को तकनीकी से जोड़ने की अत्यन्त आवश्यकता है।

वास्तविक प्रजातंत्र :

गांधी जी भारतवर्ष में वास्तविक प्रजातंत्र की स्थापना करना चाहते थे। उनका यह भी मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति का शासन में सीधा हाथ हो। अपने सर्वोदय सम्बन्धी विचारों के अन्तर्गत गांधी जी ने पंचायती राज को भी अभिन्न माना है। गांधी जी देश को पंचायतों के आधार पर संगठित करना चाहते थे। इसकी रूपरेखा

का चित्रण करते हुए गांधी जी का कहना था कि कि 'गांव का शासन चलाने के लिये हर साल गांव के पांच आदमियों की एक पंचायत चुनी जायेगी। इसके लिए नियमानुसार एक खास निर्धारित योग्यता वाले गांव के वयस्क स्त्री–पुरूषों को अधिकार होगा कि वे अपने पंच चुन लें।''[13]

आध्यात्मिक प्रभाव :

गांधी जी के सर्वोदय सम्बन्धी विचारों पर मूलरूप से आध्यात्मिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उनके चिंतन पर अनुभव तथा अध्ययन जन्य विभिन्न स्रोतों का व्यापक प्रभाव पड़ा। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से प्राप्त प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर अपने सर्वोदय की अवधारणा का निर्धारण किया। उनके चिंतन पर अपने पिता तथा माता के विचारों का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ा। गांधी जी सर्वोदय विचार की भावना, वेदान्त, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, ईसाई दर्शन तथा थोरू के विचारों को समन्वित करके प्रतिपादित की। गीता, उपनिषद व जैन धर्म के ग्रन्थों पूर्वी और पाश्चात्य चिन्तकों के विचारों में गांधी के सर्वोदय चिंतन की धारणा के स्वरूप को प्रभावित एवं विकसित करने में अनेक स्रोतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गांधी जी के सर्वोदयी अवधारणा में अनिवार्य रूप से मानवीय जीवन के सभी पक्ष समाहित है। गांधी जी ने आजीवन भर सर्वोदय की भावना से कार्य किया तथा उनके सृजनात्मक कार्यों का अत्यन्त दूरगामी महत्व है। गांधी जी के मृत्यु के उपरान्त उनके द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय सिद्धांत को आचार्य विनोबा भावे जयप्रकाश नारायण, दादा धर्माधिकारी भारतन कुमारप्पा, काका कालेलकर, शंकरराव देव इत्यादि प्रमुख चिंतकों ने अनेक रचनात्मक कार्यो द्वारा विश्वव्यापी स्तर पर लोकप्रिय बनाया।

सर्वोदय विचार केवल कल्पना लोक के विचारों का प्रतिपादन नहीं करता वरन् मनुष्य की बुद्धि को मानव समाज की नवीन संरचना के निर्माण के लिये प्रेरित करने का प्रयत्न करता है। सर्वोदय एक गतिशील चिंतन है जो कि मानवीय मूल्यों में आधारभूत बदलावों के आगमन की संभावना का सूचक है। सर्वोदय भारत के पुरातन मूल्यों की बुनियाद के आधार पर एक नये समाज को निर्मित करने के साथ ही वर्तमान कठिनाइयों की चुनौतियों को पूर्ण करने का पुरजोर प्रयत्न करता है। संसार में समय–समय पर अनेक प्रकार की आर्थिक तथा सामाजिक चिंतन धाराएं क्रियान्वित की गयी, किन्तु उन सब में सर्वोदय अत्यधिक श्रेष्ठ है। यह विचारधारा एकीकृत उन्नति का विचार सबके सम्मुख रखती है। इस आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण गुण यह है कि इसमें शासक व शासित वर्ग के मध्य कोई भिन्नता नहीं दिखाई देती। इसके अतिरिक्त सर्वोदय विचार दर्शन में इठधर्मिता के लिये बिल्कुल भी जगह नहीं है। सर्वोदय रूपी भावना समाजीकरण के बिल्कुल अनुरूप है।[14] वस्तुतः सर्वोदय समाज में भेदभाव तथा शोषण के लिये कोई स्थान नहीं है।

विभिन्न प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों के बावजूद भी वर्तमान विसंगतियों के इस वातावरण में गांधी जी का सर्वोदय चिंतन आज भी अत्यन्त प्रासंगिक व उपयोगी है। सर्वोदय संसार भर में प्रचलित समस्त नैतिक नियमों से आगे चलकर एक सर्वोत्कृष्ट विचार का सृजन करता है। यह अंधेरे से उजाले की ओर निरन्तर आगे बढ़ने का रास्ता दिखाता है और विश्व में व्याप्त अनेक गंभीर समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। सर्वोदय का मूलमंत्र वर्तमान भारत की चहुंमुखी उन्नति के लिये अत्यन्त उपयोगी है। सर्वोदय के अंतर्गत गांधी जी ने अपने विचारों को इस प्रकार से अभिव्यक्त किया जिससे कि समस्त लोगों का उदय तथा कल्याण हो सके। गांधी जी के जीवन चरित्र से सम्बन्धित सर्वोदय सम्बन्धी विचार आज भी संसार भर के लिये प्रेरणादायी है तथा उनके द्वारा किये गये सृजनात्मक कार्य दूरगामी महत्व रखते है।

आज के समय में सभी विचारक विश्व शान्ति की बात को लेकर अत्यन्त चिंतित है। संसार में व्याप्त इन सब प्रकार के डर से मुक्ति पाने के लिये गांधी जी द्वारा सुझाये गये मार्ग अत्यन्त उपयोगी प्रतीत होते

है। सर्वोदय अनेक प्रकार के मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है और विश्व कल्याण के लक्ष्यों को पूरा करने की बात करता है तथा वर्तमान युग की चुनौतियों को पूरा करने की क्षमता रखता है। मानवीय व्यवहार के पेचीदा होने के बावजूद भी इक्कीसवीं सदी के परिप्रेक्ष्य में सर्वोदय विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सर्वोदय के सिद्धांत मनुष्य के स्वभाव के अच्छे गुणों पर जोर देकर मानव जाति को परस्पर एकता, अपने आस–पास के समूहों में सौहार्द्र की भावना बढ़ाने के लिये, नैतिक नियमों को प्रयुक्त करने के लिये, सामाजिक व आर्थिक समानता, राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के द्वारा आन्तरिक तथा वैश्विक सद्भावना के मार्ग में बाधा पहुंचाने वाले अनेक तनावों का समाधान करने का प्रयास करता है। आधुनिक सन्दर्भ में सर्वोदय को एक तथा सबकी जागृति के रूप में समझा जा सकता है। सर्वोदय में व्यक्ति अपने आत्म अनुभव के सर्वोच्च शिखर को भी प्राप्त कर सकता है।[15]

सर्वोदय चिंतन का मुख्य केन्द्र बिन्दु मानव है तथा आज के मनुष्य का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन अनेक प्रकार की व्याधियों से ग्रसित है। सर्वोदय में मानवीय मूल्यों का महत्व विद्यमान रहता है। इस तरह सर्वोदय बुनियादी महत्ता से युक्त नैतिक नियमों को अभिव्यक्त कर भलाई तथा चारित्रिक विशेषताओं की सुरक्षा करने का संकल्प करता है। समाज में व्याप्त अनेक रोगों भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, असमान धन का वितरण आदि का सर्वोदय केवल एकमात्र समाधान है। सर्वोदय नैतिकता के आदर्शों को पुनर्जीवित करने पर जोर देता है और अनेक कठिनाइयों के प्रति नैतिक रूप से हल करने का मार्ग दिखाता है।

गांधी जी का सर्वोदय समाज की उन्नति के लिये अद्वितीय प्रयत्न करता है। सर्वोदय के नियम संसार भर में प्रचलित समस्त चिंतनधाराओं से सबसे अलग है। वर्तमान परिवेश में सर्वोदयी नैतिकता के माध्यम से विश्व में व्याप्त समस्त कठिनाइयों के समाधान का विश्वसनीय रास्ता ढूंढा जा सकता है। इसीलिए वर्तमान सदी के हितों को ध्यान में रखते हुए सर्वोदय रूपी समाज की कल्पना करना अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकेगा। संसार के कल्याण तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रतिनिधित्व करने वाली इस चिंतनधारा का महत्व भारत की वर्तमान परिस्थितियों में और भी निखर कर सामने आया है।

सर्वोदय चिंतन गांधीवादी युग की एक महान देन है। गांधी जी को अपने सर्वोदय पर अटल विश्वास था। आज के युग में सर्वोदय समाज की कल्पना अत्यधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। गांधी जी जीवनपर्यन्त आर्थिक समानता अस्पृश्यता की समाप्ति, नारी उत्थान, ग्रामीण उद्योगों का विकास, स्त्रियों के कल्याण तथा सर्वोदय समाज की स्थापना के लिये पूरी निष्ठा एवं कर्तव्यपरायणता की भावना से कार्य किया। गांधी जी का सर्वोदय पूर्णतः मानव कल्याण के लिये समर्पित होकर जनता की आकांक्षाओं के वास्तविक प्रतिनिधि के रूप में समाज के लिये खड़ा होता है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, स्वदेशी, आत्मसंयम, सर्वधर्म समभाव का भाव गांधी जी के सर्वोदय चिंतन की अवधारणा के मूल में निहित है। इस तरह से सर्वोदय के मूल में त्यागमय जीवन का लक्ष्य सन्निहित है। विश्व कल्याण की इस सर्वव्यापी चिंतनधारा का महत्व आज की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त बढ़ गया है। संसार का वातावरण सर्वोदय के पक्ष में है, आवश्यकता है समाज के सदस्यों को अपनी बिखरी हुई शक्तियों को इकट्ठा करके अपने को इसके अनुरूप तैयार करने की तभी गांधी जी के सर्वोदय के महत्व व लक्ष्यों को स्थापित किया जा सकता है।

संदर्भ

1. The Journalist October - December 2011 Year I Vol.-3 No. 3 Sumeet Dwivedi.
2. गांधी, महात्मा 'हिंद स्वराज' नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद 1938 पृ0 29
3. रस्किन जॉन, 'अनटू दिस लास्ट' फ्रांसिस्को क्लासिक लंदन, 1860 पृ0 10

4. 'मेरी आत्मकथा– सत्य के प्रयोग' नवजीवन पब्लिशर्स, अहमदाबाद पृ0–22
5. पूर्ववत, पृ0 55
6. श्रीमद्भागवत् गीता एवं गरूड़पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. गांधी महात्मा 'हरिजन' नवजीवन पब्लिशर्स, अहमदाबाद पृ0 10
8. पूर्ववत्, पृ0 25
9. पाण्डेय, शारदा 'गांधी की सर्वोदयी अवधारणा' भारती प्रकाशन, वाराणसी 2015, पृ0 43
10. गांधी 'मेरे सपनों का भारत' आर0के0 प्रभु सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2012, पृ0 63
11. गांधी 'मेरे सपनों का भारत' पूर्वोक्त पृ0 173–174
12. वही, पूर्वोक्त, पृ0 64
13. गांधी 'ग्राम स्वराज्य' संग्राहक हरिप्रकाश व्यास, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद 2015, पृ0 40–41
14. पूर्ववत, पृ0 44
15. मिश्रा, अनिल 'सर्वोदय : एक विकल्प' सम्पादकीय सुरजीत कौर जौली, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली 2007, पृ0 183
15. पूर्ववत, पृ0 200

———0———